सद्‌गति (प्रेमचन्द)

सद्‌गति मुंशी प्रेमचन्द जी की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में एक है। इस कहानी में लेखक ने ग्रामीण परिवेश में उच्च वर्ग द्‌वारा निम्न वर्ग के साथ किए जानेवाले शोषण का चित्रण किया है। घासीराम नामक एक ब्राह्मण पण्डित तथा दुखी नामक गरीब चमार इस कहानी के मुख्य पात्र हैं।

अपनी बेटी की सगाई का सगुन निकलवाने केलिए दुखी चमार पण्डित घासीराम के दरवाज़े पर गया। उसके मन में पण्डितजी और उनकी श्रेष्ठ जाति के प्रति अगाध श्रद्‌धा का भाव था। पण्डितजी ईश्वर के परम भक्त थे। नींद खुलते ही ईशोपासना में लग जाते थे। फिर भोजन करके आराम करते थे। पण्डितजी सगुन निकलवाने केलिए उसके साथ जाने को तैयार तो हुआ लेकिन उससे पहले दुखी से खूब काम करवाते हैं। दुखी उनके द्‌वारा सौंपे हुए काम करने लगता है।

दुखी सुबह से बिना कुछ खाये भूखे पेट काम कर रहा था। थक जाने पर उसने सोचा कि थोड़ा चिलम पी लेता तो ताकत आ जाता। गाँव में रहनेवाले एक गोंड के यहाँ से उसे चिलम - तंबाखू मिल गया लेकिन उसे जलाने के लिए आग नहीं मिला। इसलिए पण्डित जी के घर से ही आग माँगा तो पण्डिताइन ने नाराज़ होकर गाली देते हुए चिमटे से पकड़कर लायी आग उसकी ओर फेंक दिया। आग की बड़ी सी चिनगारी दुखी के सिर पर पड़ गया। वह जल्दी से पीछे हटकर सिर को झोटे देने लगा। उसने यही सोचा कि पवित्र ब्राह्मण के घर को अपवित्र करने के कारण ईश्वर की दी हुई सज़ा है।

बैठक की सफाई करके गोबर से लिपाई, खलिहान में पड़े भूसे को झौए में भरकर भुसैल में रखना आदि काम समाप्त होते होते समय करीब चार बज गए। इतने में पण्डितजी के दोपहर की नींद भी खुली। वे बाहर निकल आए तो देखा दुखी झौवे पर सिर रखे सो रहा है। उन्होंने उससे उठकर लकड़ी फाड़ डालने को कहा और यह धमकी भी दी कि काम ठीक तरह से नहीं करेगा तो साइत भी वैसी ही निकलेगी। बेचारा भूख के मारा दुखी गाँठदार लकड़ी को कुल्हाड़ी से चीरने के काम पर लग गया। लकड़ी की गाँठ पर कुल्हाड़ी बार - बार चलाने पर भी वह चीर नहीं रहा था। पण्डितजी सामने खड़े होकर उसे बढ़ावा देने लगे। गाँठ पर कुल्हाड़ी

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

चला चलाकर अन्त में उसके हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर गिर पड़ी और वह भी चक्कर खाकर गिर पड़ा। पण्डितजी के बार - बार पुकारने पर भी वह नहीं उठा, वह मर चुका था। यह खबर सुनकर दुखी की पत्नी, बेटी और कुछ औरतें वहाँ आकर लाश के सामने बैठकर रोने लगीं। पुलीस के डर के कारण चमरौने का कोई भी आदमी लाश उठा लाने को तैयार न हुआ। रात हो गयी तो पंडित और पंडिताइन उनके रोने पीटने की आवाज़ के कारण सो नहीं पाये। सबेरे हो गये तो भी कोई चमार न आया। चमारिनें भी रो- पीटकर चली गयी थीं। दुर्गन्ध कुछ-कुछ फैलने लगी थी।

अंत में पण्डितजी ने एक रस्सी निकालकर उसका फन्दा बनाकर मुरदे के पैर में डाला और फन्दे को खींचकर कस दिया। लाश को घसीटकर गाँव के बाहर ले जाकर छोड़ दिया जिसे गीदड़, गिद्ध, कुत्ते और कौए नोचने लगे। इस तरह दुखी को अपने जीवनपर्यंत की भक्ति, सेवा और निष्ठा का यही पुरस्कार मिला।

शरणागत (जयशंकर प्रसाद)

जयशंकर प्रसाद की कहानी शरणागत में सिपाही विद्रोह की गड़बड़ से भागे हुए एक संभ्रान्त योरोपियन दंपति विल्फर्ड और उसकी पत्नी एलिस द्वारा ठाकुर किशोरसिंह नामक एक ज़मींदार की पत्नी सुकुमारी को यमुना में डूबने से बचाने का और ठाकुर के अनुरोध पर उनके यहाँ कुछ दिन केलिए अतिथि बनकर रहने का वर्णन है।

सुकुमारी चंदनपुर गाँव के ज़मीन्दार ठाकुर किशोरसिंह की पत्नी थी। एक दिन वह अपनी सखियों के साथ यमुना नदी में स्नान कर रही थी। अकस्मात पवन बड़े वेग से चलने लगा और वह उन्हीं तरंगों में निमग्न हो गयी। उसकी सखियाँ खबराकर रोने लगीं। तब सूरज भी निकला नहीं था। मगर जब अन्धकार हट गया और सूर्य भी दिखाई देने लगा तब उन्होंने देखा कि सुकुमारी एक नाव पर एक अंग्रेज़ी पुरुष और स्त्री के साथ बैठी हुई है। तट पर आने पर सखियों को मालूम हुआ कि उन्होंने सुकुमारी को डूबने से बचाया है और उसे पहुँचाने केलिए यहाँ तक आए हैं। थोडी देर में यह खबर पूरे गाँव में फैल गया। ठाकुर किशोरसिंह भी वहाँ

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

आ गए। ठाकुर और उन्य लोगों के अनुरोध करने पर विल्फर्ड और एलिस को उनका आतिथ्य स्वीकार करना पडा। कुछ दिनों तक उन्हें ज़मीन्दार के यहाँ रहना पडा। वहाँ सब प्रकार के सुख सुविधाओं के साथ रहने पर भी सिपाहियों के अत्याचार के बारे में सुनकर वे शंकित रहते थे। दयालु किशोरसिंह यद्यपि उन्हें आश्वासन देते तो भी एलिस सदा भयभीत रहती थी। एक दिन बाहर कोलाहल सुनाई पड़ा तो एलिस भय से मूर्छित हो गयी। विल्फर्ड और किशोरसिंह ने उसे पलंग पर लिटाया। फिर उन्होंने विल्फर्ड को वहीं बैठने को कहकर स्वयं तलवार लेकर बाहर निकल गए। तब उन्हें मालूम हो गया कि पास के सुन्दरपुर गाँव को सिपाहियों ने लूट लिया है और प्रजा दुखी होकर जमींदार से अपनी दुख गाथा सुनाने आयी है। किशोरसिंह ने सबको आश्वासन दिया और उन सबके खाने पीने का प्रबंध भी करवाया। किशोरसिंह स्भवाव से अत्यन्त दयालु थे। इसलिए प्रजा उन्हें पिता के समान मानते थे और उनका सम्मान भी करते थे। उनका प्रेम सब पर बराबर था और विल्फर्ड और एलिस के प्रति उनके दिल में विशेष चाहत थी क्योंकि अन्होंने उनकी प्रियतमा सुकुमारी को बचाया था।

भारत में जब शान्ति स्थापित हुई तब विल्फर्ड और एलिस अपने नील की कोठी पर वापस जाने की इच्छा प्रकट की। नील की कोठी चन्दनपुर से दूर था। इसलिए किशोरसिंह ने उन्हें ले जाने केलिए दो घोडों को सजाकर तैयार करवाया और आठ सशस्त्र सिपाहियों को भी उन्हें पहुँचाने केलिए नियुक्त किया। उनके जाने के दिन विल्फर्ड और किशोरसिंह पाईं-बाग में टहल रहे थे। वे एलिस की प्रतीक्षा कर रहे थे। इतने में एलिस भी तैयार होकर सुकुमारी के साथ आ गयी। वह अपने गौण के बदले फिरोजी रंग के रेशमी कपड़े का कामदानी लहँगा और मखमल की कंचुकी पहनी हुई थी, जिसके सितारे रेशमी ओढ़नी के ऊपर से चमक रहे थे। उसके स्वाभाविक अरुण अधरों में पान की लाली और आँखों में काजल की रेखा भी थी। उसकी चोटी फूलों से गूँथी थी और मस्तक में लाल बिन्दी भी थी। किशोरसिंह ने एलिस से कहा कि उसके लिए घोड़ा तैयार है तो सुकुमारी ने उसके लिए पालकी मँगवाने को कहा। इस तरह कुछ दिनों में ही एलिस सुकुमारी के सहयोग से भारतीय संस्कृति को अपना लिया। इस छोटी सी कहानी के द्वारा जयशंकर प्रसाद ने भारतीय संस्कृति के महत्व को चित्रित किया है।

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

डोमिन काकी (चित्रा मुद्गल)

हिन्दी साहित्य की वरिष्ठ कथा लेखिका चित्रा मुद्गल द्वारा रचित एक लघु कथा है डोमिन काकी। इस कथा के माध्यम से उन्होंने समाज में प्रचलित छुआछूत के चित्रण करने का प्रयास किया है।

इस कहानी के मुख्य पात्र हैं एक छोटी लड़की, उसकी दादी और डोम जाति की एक औरत। गर्मियों की छुट्टियों में बिट्टो गाँव जाया करती थी। गाँव का जीवन उसमें कौतुक उपजाता था। एक बार जब वह छह साल की उम्र में गाँव आयी तब एक दिन उसकी नज़र दहलीज पार कर आँगन में घुसती हुई डोमिन पर पड़ी। डोमिन अटारी पर बनी टट्टी और आँगन में नर्दवा को साफ करने आयी थी। उसे देखते ही बच्ची ने चिल्लाकर कहा कि डोमिन आयी है। उस वक्त दादी लाल मिर्चियों का टेंपर तोड़कर सींक से उसमें मसाला भर रही थी। यह सुनते ही दादी ने मिर्च छोड़कर तड़ाक से बच्ची के गाल पर तमाचा मारा और कहा डोमिन काकी पुकारो। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। बिना मारे भी तो गलती सुधारी जा सकती थी।

हफ्ता बीत गया। फिर अगली बार डोमिन काकी से मिलने पर उसने मुस्कुराकर हाथ जोड़ दिए। प्रत्युत्तर में डोमिन काकी ने दोनों हाथ उठाकर उसका आशीर्वाद दिया। काम खतम करके डोमिन काकी कोंछ केलिए नहाकर बैठी थी। तब दादी ने उसे देने केलिए बच्ची के नन्हे हाथों पर अनाज भरी टोकरी पकड़ायी और ऊपर नाश्ते केलिए बासी पनेखियाँ रखकर काकी के कोंछ में डाल आने का आदेश दिया। बच्ची को पास आता देख प्रसन्न डोमिन काकी ने अपना कोंछ पसार दिया। सावधानीपूर्वक उसने टोकरी उलट दी, लेकिन दो- चार मुट्ठी अनाज बाहर छिटक गया। अनाज सरियाने में वह काकी की सहायता करने लगी। अचानक झपटती हुई सी दादी वहाँ आयी और बच्ची के गाल पर तमाचा मारी और चिल्लाने लगी, "छू लिया तू ने रतनी को"?

बच्ची की सिसकन की उपेक्षा करती हुई दादी नें उसे खींचकर नहान घर की ओर ले गयी। वहीं से उन्होंने बड़ी काकी को पुकारकर दोनों के ऊपर गंगाजल छिटकने और दो बाल्टी पानी स्नान केलिए रख देने को कहा। स्वयं नहा लेने और

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

उसे नहला देने के बाद भी दादी का गुस्सा शान्त नहीं हुआ। दादी ने उसे यह चेतावनी दी कि आइन्दा डोमिन को छूना मत। सहमी हुई बच्ची दौड़कर बड़ी काकी के गोद में छिप गयी। तब भी उसे यह बात मालूम नहीं थी कि दादी ने उसे क्यों मारा।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से चित्राजी यह बताना चाहती हैं कि हमारा आधुनिक होता समाज एक तरफ तो चाहता है कि हमारी नई पीढ़ी सुसंस्कारी हो, उनमें छोटे- बड़े के प्रति आदर भाव विकसित हो। दूसरी तरफ छुआछूत और जातपाँत की भावना को मन से निकालने को तैयार नहीं।

माँ रसोई में रहती है (कुमार अंबुज)

कुमार अंबुज की कहानी माँ रसोई में रहती है एक माँ की व्यस्त दिनचर्या और उसके निजी जीवन के सुखों को चित्रित करती है। लेखक अपनी माँ को हर वक्त रसोई में ही देखता है। जब कभी रात में लेखक की नींद खुलती, चाहे बारह बजे हो, चार बजे हो या सुबह सुबह पाँच बजे, माँ तो रसोई में ही दिखाई देती थी। पूछने पर कभी कहती थी कि पानी पीने के लिए आयी, कभी कहती थी कि दही जमाने के लिए दूध रखना भूल गयी उसके लिए आयी, कभी कहती थी कि सुबह के लिए चने भिगोने के लिए रखना भूल गई या आटा फ्रिज में रखना भूल गयी उसके लिए आयी और कभी दूध का हिसाब लिखते हुए दिखाई देती थी।

रसोई में दक्षिण दिशा की तरफ एक छोटी सी खिड़की थी। रात को और कुछ करने को नहीं थी तो माँ खिड़की से बाहर देखती रहती थी। माँ का सारा काम रसोई से संबन्धित होता था। ब्लाउस के हुक टाँकने से लेकर गेहूँ फटकने तक का सारा काम माँ रसोई में बैठकर ही करती थी। साल में एकाध बार मौसी या बुआ को माँ चिट्ठी लिखती थी तो वह भी रसोई में बैठकर गोद में कोई किताब रखकर कॉपी के पन्ने पर लिखती थी। बगल की चाची या पड़ोस की काकी आती थी तो माँ उन्हें भी रसोई में ही बिठाती थी। मोहल्ले भर के सब को खबर थी कि माँ की रसोई करीने से जमी हुई और साफ सुधरी है।

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

जब माँ फुरसत में अकेली बैठती थी तो वहीं रसोई में ही उनके प्रिय स्टूल पर बैठती थी या फिर थोड़ी देर के लिए खिड़की से बाहर देखती रहती थी। खिड़की से वह क्या देखती थी इसका पता लगाना भी मुश्किल था। माँ से कुछ भी पूछने पर उसका उत्तर भी वह रसोई में खड़े होकर ही देती थी। इस तरह माँ को रसोई से बाहर निकालने के लेखक का सारा प्रयत्न बेकार हो जाता था। लेखक माँ को हर वक्त रसोई में ही देखकर उससे यही कहता था कि कुछ देर के लिए अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर सो जाया करो या बाहर कहीं निकला करो। तब माँ यही कहती थी कि उसे रसोई में ही शांति मिलती है। हर बार लेखक माँ के उत्तर के आगे मौन हो जाता था और चुपचाप अपने कमरे में चला जाता था।

एक दिन लेखक रसोई के सामने से गुज़रा तो देखा कि माँ किचन के प्लैटफॉर्म पर चढ़कर टाँड़ पर से कोई डिब्बा उठाने की कोशिश कर रही थी। फिर वह डिब्बा लेकर प्लैटफॉर्म से ज़मीन पर कूद गयी तो उसकी एड़ी में मोच आ गई। फिर वह वहीं स्टूल पर बैठकर हल्दी की पुलटिस तैयार करने लगी। उसी रात बीच में लेखक की नींद खुलने पर उन्होंने देखा माँ खिड़की पर खड़ी होकर बाहर देख रही है और कुछ समय बाद वह स्टूल पर बैठकर दीवार से सिर ठिकाकर आँखें बन्द कर लीं।

हमारे समाज में गाँव की शादीशुदा औरतों का स्थान हमेशा रसोई में ही होता था। वही उनकी दुनिया बन जाती थी और परिवारवालों केलिए काम करते रहना उनका दायित्व होता था। इसी बात का चित्रण इस कहानी में हुआ है।

अमरूद का पेड़ (ज्ञानरंजन)

ज्ञानरंजन की एक सुन्दर कहानी है 'अमरूद का पेड़'। इस कहानी के द्वारा लेखक ने अपने घर के सामने अपने आप ही उगकर बढ़ते एक अमरूद का पेड़ किस तरह परिवार का हिस्सा बनता है और परिवार के लोगों पर प्रभाव डालता है आदि का वर्णन किया है। शुरू - शुरू में परिवार के सभी लोग उस छोटे पेड़ के प्रति उदासीनता रखते थे। जब वह बड़ा हो गया और घर के आँगन में भरा- भरा लगने लगा तो पड़ोस के बाबू कन्हैया लाल की पत्नी ने आकर लेखक की अम्मा

VTMNSS COLLEGE LIBRARY

से कहा कि घर का दरवाज़ा पश्चिम की तरफ हो और मकान के सामने ही अमरूद का पेड़ हो तो बड़ा अशुभ होता है। यह सुनकर अम्मा उदास हो गयी। लेकिन लेखक को पूरा विश्वास था कि इन सब पिछड़े खयालों का उनके घर में गुज़र नहीं हो सकेगा।

धीरे- धीरे अमरूद का पेड़ लेखक तथा परिवार के अन्य सदस्यों की ज़िन्दगी में एक घरेलू हिस्सेदार बन गया। उसके नीचे बैठकर घरवालों की चर्चाएँ होती थी और बच्चों केलिए छोटा सा झूला भी उस पर डाला गया था। घोष बाबू के माली ने माँ को बताया कि पहली फसल के फल तोड़कर फेंक देने से दूसरी बारी में फल खूब और अच्छे आते हैं। माँ ने ऐसा ही किया। घर के बच्चों तथा बड़ों के लिए वह पेड़ प्यारा बन गया। दशहरा, दीवाली आदि तीज- त्योहार के अवसर पर अमरूद की पत्तियों में सूरन पकाकर खाया जाता था। बाहर के मेहमान भी घर के अमरूद में इलाहाबाद के अमरूदों की प्रसिद्धि का इत्मीनान कर लेते थे।

लेखक को आजीविका के लिए घर छोड़कर जाना पडा तो उनके मन में सदा घर से दूर रहने के दुख के साथ- साथ अमरूद के पेड़ की चिन्ता भी थी, क्योंकि उस अमरूद के पेड़ के माध्यम से लेखक अपने अन्दर एक जागृति का भान महसूस करता था। मगर घर से आनेवाली चिट्ठियों से उन्हें पता चला कि घर में होनेवाली समस्याओं, जैसे कि बड़ी बहू की अलगाव- भावना, सबसे छोटे का निठल्लापन, माँ की बीमारी और लोगों के धन्धे से बिखर जाना आदि बहुत दिनों तक दरवाज़े पर उसी अमरूद के पेड़ के लगे रहने का दुष्परिणाम समझा जाता है। इसलिए माँ उसे काटने को कहती है। लेखक ने अपनी माँ को समझाते हुए अमरूद के पेड़ को न काटने की अपनी बात पर ज़ोर देनेवाली एक चिट्ठी लिख दी। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। नौकरी की पहली छुट्टी बिताने लेखक अपना घर पहुँचे तो वहाँ अमरूद का पेड़ नहीं था। उसके स्थान पर गुलदाउदी और केले की क्यारियाँ बना ली गयी थीं। माँ ने घर की सुख शान्ति के लिए अमरूद के पेड़ को कटवा लिया था।

VIMNSS COLLEGE LIBRARY

सलाम (ओमप्रकाश वाल्मीकि)

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'सलाम' समाज में व्याप्त उच्च और निम्न वर्ग की जातियों के आपसी भेदभाव के कारण होनेवाले लड़ाई - झगड़े की व्यथा को चित्रित करती है। कहानी का कथानक बहुत ही रोचक है। कमल उपाध्याय नामक युवक अपने दोस्त हरीश की शादी में भाग लेने के लिए एक गाँव में आता है। कमल शहर में पला बढा व्यक्ति था गाँव के बारे में सिर्फ पढ़ा था। लेकिन गाँव आने पर उसे वहाँ की दयनीय स्थिति को देखने और महसूस करने का मौका मिला।

हरीश चूहड़े जाति का था। उसकी शादी की रस्म पूरी होते होते रात के दो बज गए। बारात को ठहराने केलिए एक स्कूल का बरामदा ही मिल पाया था। कमल और हरीश को भी उसी बरामदे में थोड़ा जगह मिला और वे वहीं आराम करने लगे। कमल को सुबह पाँच बजे उठने की आदत थी। घर में उसकी माँ पाँच बजे से ही पूजा पाठ में लग जाती थी और उससे पहले वे चाय बनाकर कमल के हाथ में थमा देती थी। अत: कमल को ऐसी आदत पड़ गयी कि यदि छह बजे तक चाय न मिले तो सिर भारी होने लगेगा। एक बुजुर्ग व्यक्ति से उसे पता चला कि गाँव के बाहर एक चाय का दुकान है।

सुबह उठते ही कमल चाय की तलाश में निकल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर वह एक खुली और रेतीली जगह पर आ गया। सामने ही सड़क के पार एक छप्परनुमा दुकान थी। वहाँ एक जर्जर सा बूढ़ा आदमी उकडूँ बैठा बीड़ी पी रहा था। कमल ने उससे चाय माँग ली। तब उस बूढ़े दुकानदार कोयले से भट्ठी को सुलगाने की कोशिश करने लगा और साथ साथ कमल से बातचीत भी करने लगा। जब उसको यह पता चला कि कमल चूहड़े के घर की बारात के साथ आया व्यक्ति है तब उसने साफ साफ बताया कि इस दुकान में चूहड़ों को चाय नहीं मिलेगा। कमल ने उसे यह बात समझाने की कोशिश की कि वह ब्राह्मण है तो वह इस बात को मानने को तैयार नहीं था। दोनों में बातचीत होने लगा तो राह चलते कुछ लोग वहाँ जमा हो गए। पहलवान रामपाल भी वहाँ पहुँच गया और वह कमल को गालियाँ देने लगा। उसने कमल को धक्का देकर छप्परनुमा दुकान से बाहर कर दिया। कमल को घोर अपमान महसूस हुआ। तब उसे हरीश का एक - एक शब्द याद आने

VTM NSS COLLEGE LIBRARY

लगा। हरीश ने पहले ही बताया था कि गाँव में दलितों की हालत बहुत बुरी है। कमल किसी न किसी प्रकार वहाँ से बचकर हरीश के पास आया।

कमल के मन में पन्द्रह वर्ष पुरानी घटना याद आयी। एक दिन हरीश स्कूल से कमल के साथ उसके घर गया था। कमल की माँ ने दोनों को खाने के लिए कुछ दिया। जब दोनों बच्चे खा रहे थे तब माँ ने हरीश से पूछा कि उसके पापा क्या काम करते हैं। हरीश ने बताया कि वे नगरपालिका में सफाई कर्मचारी हैं तो माँ क्रोध में आकर ढेर सारी गालियाँ दीं और उसे वहाँ से भगा दिया। तब हरीश को पहली बार लगा कि कमल और वह दोनों अलग अलग हैं। पुरानी यादों में डूबे हुए कमल को हरीश ने एक गिलास चाय दी।

शादीवाले घर में काफी चहल पहल थी। दो पहर के खाने में विशेष इन्तज़ाम किया गया था। पास के कस्बे से नान और मीट बनाने के लिए कारीगर बुलाया गया था। हरीश के ससुर जुम्मन सरकारी कर्मचारी था और वह शहर में रहता था। उन्होंने अपनी बड़ी बेटी को भी अपने साथ ले गया था और वहाँ उसे स्कूल में भर्ती करवाकर हाईस्कूल की परीक्षा पास कराया। वह गाँव भर की लड़कियों से अलग दिखाई पड़ती थी। जुम्मन की पत्नी उच्च वर्ग के कुछ घरों में काम करती थी। उन घरों में हरीश को सलाम की रिवाज़ पूरी करने केलिए जाना था। पढ़ा-लिखा युवक हरीश इसके लिए तैयार नहीं था। वह इस रिवाज़ को अपमान समझता था। लेकिन जुम्मन यही चाहता था कि हरीश सलाम पर जाए, उसको यह डर था कि बड़े लोगों को शत्रु बनाकर गाँव में रहना मुश्किल हो जाएगा। उच्च वर्ग के लोगों ने इस बात पर अपना विरोध भी प्रकट किया मगर हरीश उपने फैसले पर अटल रहा। तब उसकी आँखों में आत्मविश्वास और उगते सूरज की चमक दिखाई पड़ रही थी।

इस कहानी के अन्त में एक छोटा लड़का खाना बनानेवाले कारीगर को मुसलमान समझकर, मुसलमान के हाथ की बनी रोटी खाने को इनकार करते हुए देखकर कमल और हरीश चकित हो जाते हैं। जात- पाँत की कट्टरता सहनेवाले भी औरों को अपने से निम्न समझकर उनके साथ वही व्यवहार करते हैं जो अपने साथ किया जाता है।

VIMNSS COLLEGE LIBRARY